हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

आधुनिक काव्यगीतों में युगबोध

डॉ. राजदेव मिश्र

प्रस्तावना :–

ईश्वर निर्मित प्रकृति परिवर्तनशीला है।, इसलिए संसार शब्द जगत वाची माना गया है। ''संसरति इति संसारः'' अर्थात् जो हमेशा चलता रहे उसे संसार कहते हैं। काल ने इस अविच्छिन्न धारा को भले ही विभाजित किया हो, लेकिन समसामयिक अद्यतन को आधुनिक काल के रूप में परिभाषित किया है। पूर्व घटित घटनाओं को भूतगत एवं अनागत को भविष्यकाल के रूप में परिभाषित किया जाता है। आधुनिककाल का अभिप्राय हमारे समझ से प्रस्तुत समयावधि मानी गयी है और यह देखा गया है कि जो संसार में घटित होता है उसको आधुनिक घटित घटना के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस आधुनिकता में अनेक परिक्षेत्र देखने को मिलते हैं चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक या साहित्यक दृष्टि में से किसी का हो। इन सभी दृष्टियों पर वर्तमान युग का प्रत्यक्षीकरण प्रत्येक मनुष्य को होता है और इसी को हम युगबोध के रूप में परिभाषित करते हैं। इस प्रकार संसार का परिवर्तन अथवा परिवर्धन होता है और उसका प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में देखा जाता है। यदि हम साहित्य के क्षेत्र का विहंगावलोकन करें तो हमे काव्य की अनेक विधाएं इस आधुनिक युग में प्राप्त होती है। इसमें प्रायः पूर्वकाव्य संशिलिष्ट न तो कोई बंध होता है और न ही कोई परिधि, इसलिए इसे नई कविता के रूप में साहित्य ने स्वीकार किया है। नई कविताओं को लिखने वाले कवियों ने प्रायः मनुष्य संशस्पृषित लगभग सभी क्षेत्रों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। हमारे यहाँ कविता का इतिहास कई हजार वर्ष पुराना माना जाता रहा है। आदिकवि वाल्मीकि से लेकर आज तक न जाने कितने कवियों ने विभिन्न विषयों को केन्द्र में रखते हुए अपनी लेखनी चलाई है।

काव्यगीतों में युगीन प्रभाव :–वैसे जहाँ तक किसी भी साहित्य या रचना का सवाल उठता है वह कोई भी, किसी भी समय या परिवेश का अथवा किसी भी विधा का क्यों न हो? उसमें तत्युगीन कोई न कोई युगबोध जरूर पाया जाता है अगर उस रचना में युगबोध न हो तो उसे रचना कहना उचित न होगा। कोई भी रचना बिना तत्युगीन समस्या को केन्द्र में रखे हुए नहीं लिखी जा सकती है। इस सन्दर्भ में वरिष्ठ आलोचक डॉ. शिवकुमार मिश्र का कथन दृष्टव्य होगा ––''कोई भी साहित्य हो, वह अपने युग और समय की उपज होता है। रचना में अतीत का आख्यान हो अथवा आगत का कथन, रचना के अपने युग और समय की अनुगूँज न केवल उसमें विद्यमान रहती है, रचना में चित्रित अतीत अथवा भविष्य के आख्यान को अपनी युग–संदर्भिता भी देती है। और भी, वह अतीत या भविष्य को अपने समय–संदर्भ में रचते हुए काल की अविच्छिन्नता का साक्ष्य भी देती है। जो साहित्य अपने युग और अपने समय का नहीं होता वह वस्तुतः किसी भी युग या समय का नहीं होता। हिन्दी साहित्य बुनियादी तौर पर अपने युग और अपने

ISSN : 2582-9092

समय का साहित्य है। उसका कथ्य किसी भी युग और समय का हो, रचना या रचनाकार का अपना युग और अपना समय उसमें अनिवार्यतः अनुगुंजित होता है।1 तुलसी, कबीर, नानक, दादू, आधुनिककाल में भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद युग की कविताओं में या फिर नई कविताओं में इसी प्रकार का युगबोध देखा जा सकता है। किसी भी युग का कवि या लेखक तत्युगीन समस्याओं को केन्द्र में रखकर ही अपनी रचनाधर्मिता का निर्वाह करना चाहता है जिसे आधुनिक कवियों ने भी करने का प्रयास किया। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक जैसी कुछ समस्याएं तो प्रत्येक काल और समय में थोड़े बहुत अंतर के साथ होती ही है। कुछ समस्याएं ऐसी भी होती हैं जो किसी विशेष परिस्थिति में पैदा होती हैं जिसका प्रभाव कवियों या साहित्यकारों पर भी पड़ता है, जिसको कवि अपनी लेखनी का विषय बनाता है। देश विभाजन के समय पर कवियों ने जो कुछ भोग या समझा होगा उसे अपनी लेखनी में बद्ध करने की कोशिश उस प्रकार की होगी। कुछ कवियों का मानना था कि देश विभाजन का मुख्य कारण ब्रिटिश शासन है। देश विभाजन और हिन्दू–मुस्लिम समुदाय के बीच भेद–भावना को कवियों ने नकारा है। बच्चन लिखते हैं कि–

विदेश की कुनीति हो गई, सफल
समस्त जाति की न काम दी अकल
सकी न भॉप एक चाल, एक छल।1

यही स्वतन्त्र लता लगा गया,
कि मुल्क और छोर खून से रंगा
स्वदेश सर्प काल को गया ठगा।2

मतलब साफ है कि तत्युगीन कवियों पर देश–विभाजन और साम्प्रदायिक भावना का प्रभाव पड़ा और उन्होंने उसे अपनी कविता का विषय बनाया।

देश विभाजन, काश्मीर समस्या, जैसी समस्याएं तब से लेकर आज तक सुरसा राक्षसी की भाँति मुँह बाए खड़ी है, जिसमें से काश्मीर की समस्या तो ऐसी है जो छोटी होने का नाम ही नहीं ले रही है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी कोई भी सरकार इस समस्या से भारत को निकाल नहीं पाई थी आज की भॉति तत्युगीन कवियों ने भी काश्मीर और भारत की एकता के गीत गाए। यथा–

बनकर शमशीर उठी जनता
बजता परबत का नक्कारा
नदियाँ बिजली बन उतर पड़ीं
हो गया लाल ध्रुव का तारा।

ISSN : 2582-9092

अभी कुछ दिन पूर्व ही भारत की वर्तमान सरकार ने वर्षों की कश्मीर समस्या का हल निकाला जिसम वहाँ पर अस्थायी तरीके से लगी अनुच्छेद 35 ए और 370 को समाप्त करके उसे भारत का अभिन्न अंग स्वीकार किया। जिसको लेकर समाज के कुछ बुद्धिजीवी वर्गों ने विरोध भी किया।

इसी कड़ी में बापू की मृत्यु से तत्युगीन सम्पूर्ण समाज व्यथित हुआ बापू की मृत्यु से कवि हृदय भी कराह उठा। जिसके परिणाम स्वरूप कवियों में भी दो समूह हो गए एक ने बापू के निधन पर शोक प्रकट किया तो दूसरे ने बापू के आदर्शों की बात की। गिरिजाकुमार माथुर ने लिखा –

तप में रची अस्थियों से
जन–ब्रज हुआ निर्माण
मिट्टी नवयुग, तन का हर कन
रवि की नई उठान
तुमने मर कर मृत्यु मिटी दी
विश्व निहाल हुआ।3

नागार्जुन जैसे कवियों ने बापू के आदर्शों की बात करते हुए उन्हें एकता और मानवता का पुजारी बताया। शिमंगलसिंह सुमन की दृष्टि में बापू की हत्या करने वाला उस परम्परा का हत्यारा था, जिसमे रावण, कंस, दुर्योधन और हिरण्यकश्यप आते हैं।4

एक तरफ आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज, जैसे प्रमुख धार्मिक आन्दोलन समाज की सामाजिक रूढ़ियों का तोड़कर मानवीय भावनाओं के आधार पर एक प्रतिष्ठित समाज की स्थापना करना चाहते थे तो दूसरी ओर बंगाल में चैतन्य महाप्रभु का आन्दोलन जोर पकड़ रहा था, जिसने हिन्दी साहित्य को प्रभावित किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर की रचनाएं भी हिन्दी कविता पर अपना प्रभाव डाल रही थीं। आगे चलकर इन्ही के परिणाम स्वरूप इन कवियों ने रूढ़ियों का खण्डन करते हुए युगीन समस्याओं को अपनी कविता का केन्द्र बनाया। गांधीवादी विचारधारा और गांधीजी के जागृति संदेश तथा हरिजन उद्धार, जाति–पाँति के बंधन जब ढीले पड़ने लगे उस समय कवियों की दृष्टि झोपड़ियों में रह रहे, भोजनादि के अभाव में मानव जीवन जी रहे लोगों पर पड़ी। श्रमिक और किसानों का चित्रण कविता का मुख्य विषय बनी।

श्रमिक समस्या हरेक युग की ज्वलंत समस्या रही है और इस समस्या पर युगीन सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए कवियों ने अपनी लेखनी चलाई है। गरीबी एक ऐसी समस्या है जो किसी भी समाज, धर्म या जाति के लोगों को तोड़ सकती है। इस समस्या से कवि भी प्रभावित हुए, शायद यही कारण है कि पंत को अपनी कविता में लिखना पड़ा–

श्वानों को मिलता दूध वस्त्र,
भूखे बच्चे अकुलाते हैं।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर
जाड़े की रात बिताते हैं।।5

ISSN : 2582-9092

निराला की 'वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक' जैसी कविताएं न केवल तत्युगीन परिवेश में बल्कि आज के परिप्रेक्ष्य में भी उतनी ही ज्वलंत समस्या है, जितनी तत्युगीन समाज के लिए रही होगी।

इसी श्रेणी में कवि धूमिल ने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त गरीबी (विशेषकर रोटी की समस्या) का चित्रण किया है। मनुष्य की तीन सर्वोपरि आवश्यकताओं में रोटी, कपड़ा और मकान में पहली आवश्यकता रोटी की अनिवार्यता होती है। इसका अभाव मानव के जीवन में अशक्य और अकल्पनीय दुःख उत्पन्न कर देता है। धूमिल ने अपनी समग्र कविताओं में इसी रोटी की समस्या को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। भूख का वर्णन कई कविताओं में और सन्दर्भों में मिलता है। उनके भूख विषयक सभी विचारों –तर्को का एक ही आधार है –

आज मैं तुम्हें सत्य बतलाता हूँ
जिसकी हर सच्चाई
छोटी है इस दुनिया में
भूखे आदमी का सबसे बड़ा तर्क
रोटी है'[6]

आधुनिक कवियों की कविताओं का मुख्य विषय समाज की भेदक रेखा को दूर करके एक सभ्य, सुखी, सुन्दर और शोषण मुक्त समाज की कल्पना करना रहा है, इसी कड़ी में कवि मुक्तिबोध भी एक शोषण मुक्त समाज की कल्पना करते हुए लिखते हैं –

मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में / सभी मानव
सुखी, सुन्दर व शोषण मुक्त कब होंगे।''[7]

जिस भारत को कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था और जहाँ दूध और दही की नदियाँ बहा करती थी (पद्भनाभ, तिरुपति बालाजी, शिरड़ी का सॉई मंदिर, आदि के अलावा कई अन्य मंदिर भी शामिल हैं।) आज उस देश की जनता को पानी के लिए भी तरसना पड़ रहा है, वह भी बिकाऊ हो गया है। जिसके पास पैसे हैं वह खरीदकर ठण्डा पानी पी सकता है, अन्यथा उसे बिना पानी के ही रहना पड़ेगा, कवि एकान्त श्रीवास्तव के शब्दों में

अगर आपके पास पचास पैसे हैं
तो आप एक गिलास ठण्डा पानी पी सकते हैं।[8]

वैसे यह कवि के समय की बात थी, आज वही पानी का पाउच दो रूपये में बिक रहा और गिलास की जगह पाउच ने ले ली है। महाराष्ट्र का लातूर, गुजरात, मध्यप्रदेश, उ.प्र. के कुछ जिले आज की तारीख में ऐसे हैं जहॉ की जनता एक बूँद पानी के लिए तरस रही है। कवि का मानना है कि इस देश में

ISSN : 2582-9092

पहले लोग भूख से पीड़ित थे लेकिन आज तो लोगों को प्यास के लिए भी लड़ना पड़ रहा है। यह कवि के समय का या आज के समय का युगबोध नहीं हैं तो क्या है?

अब तक हम अपनी भूख से लड़ते थे
अब हमें अपनी प्यास से भी लड़ना पड़ेगा।9

आर्थिक समस्या भी प्रत्येक युग की समस्या रही है। जिससे समाज का एक वर्ग विशेष जूझ रहा होता है जिसे कवियों ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

वर्ग–विषयक समस्या :–

वर्तमान समय में दलित विमर्श और नारी विमर्श हिन्दी साहित्य विषय म मुख्य रहा है वैसे ये दोनों विमर्श थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ प्रत्येक समाज में दिखाई देते रहे हैं। दलित विमर्श की नींव वैसे तो महात्मा बुद्ध, कबीर, ज्योतिबाफुले, बाबासाहेब आंबेडकर, आदि ने डाल दी थी, जिसके परिणाम स्वरूप कवियों ने भी इसे अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश की है। आधुनिक युगीन कवि इस समस्या को लेकर थोड़ा ज्यादा जागरूक दिखाई देते है। अस्पृश्यों की समस्या आजादी के बाद भी दिखाई देती रही है। आजादी के वर्षों बाद की समस्या का चित्र अंकित करते हुए कवि बच्चन लिखते हैं कि–

अगर विभेद उँच–नीच का रहा
अछूत–छूत भेद जाति ने सहा,
किया मनुष्य औ मनुष्य में फरक
स्वदेश की कहीं नहीं कुहेलिका।।
अगर चला फसाद शंख गाय का,
फसाद सम्प्रदाय–सम्प्रदाय का,
उलट न हम सके, अभी नया बरक,
चढ़ी अभी स्वदेश पर विभीषिका। 10

नारी विमर्श भी वर्तमान समय का एक मुख्य विमर्श माना जाता है। नारियों के जीवन में सदियों से उतार चढ़ाव देखा जाता रहा है। नारी की स्थिति पर यदि विहंगम दृष्टिपात करे तो पता चलता है कि सामंती समाज में नारी का दर्जा माँ, बहन, पत्नी, प्रेमिका और दासी तक ही सीमित था। उसका अलग से अपना कोई वजूद नहीं था। बदलते समय के साथ–साथ कवियों एवं साहित्यकारों के साथ नारियो की सोच में भी बदलाव आया और वे प्रत्येक क्षेत्र में अपने आप को पुरुष के समक्ष खड़ी पा रही हैं। आज की नारी घर की चहरदीवारी से बाहर निकलकर बाहर के कामधंधों, शिक्षा, नौकरी, आदि क्षेत्रों में अपने आप को मजबूत किये हुए है। बदलते समय के साथ–साथ कवियों की सोच में भी बदलाव आया, शायद

ISSN : 2582-9092

इसीलिए एक तरफ जहाँ प्रसाद 'समर्पण लो सेवा का सार' कहकर नारी की सारी आकांक्षाओं को पुरुष के चरणों में समर्पित करते नजर आते हैं वहीं पन्त नारी की मुक्ति की कल्पना करते हैं–

मुक्त करो नारी को मानव
चिरवन्दिनी नारी को
युग–युग की बर्बर कारा से
जननी सखी प्यारी को।11

पुरुष प्रधान देश में आज जहॉ नारी पुरुष के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर हरेक क्षेत्र में पदार्पण कर चुकी है, उसके पीछे शायद एक ही कारण है और वह है नारियों के जीवन से जुड़ी समस्याओं का खुलकर सामना करना। अगर नारियॉ खुलकर सामने आएंगी तो सामने कई समस्याओं का आना भी स्वाभाविक है, लेकिन 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती' की भॉति अगर हम आगे बढ़ेगें तो सफलता का आना भी निश्चित है, समस्या चाहे जो भी हो। तस्लीमा नसरीन की कविता इसी सन्दर्भ में ध्यातव्य होगी–

यह अच्छी तरह से याद रखना
तुम जब घर की चौखट लाँघोगी
लोग तुम्हें टेढ़ी–मेढ़ी नजरों से देखेंगे।
–– जब तुम गली पार करके मुख्य सड़क
पर पहुँचोगी लोग तुम्हें चरित्रहीन कहकर गालियाँ देंगे
तुम व्यर्थ हो जाओगी, अगर पीछे लौटोगी,
वरना जैसी जा रही हो, जाओ।।12

अगर नारियाँ इस बात की परवाह न करके आगे बढ़ती जाएंगी तो निश्चित ही उन्हें अपने जीवन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ेगा।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार उपर्युक्त सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, साहित्यक आदि बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए यदि कहा जाय तो यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक युग का साहित्य किसी न किसी सन्दर्भ में युगीन अवश्य होता है। साहित्य समाज का दर्पण है की भॉति समाज में बदलाव के साथ साहित्य में बदलाव आना भी उसकी स्वाभाविक प्रक्रिया है। आधुनिक युग के कवियों ने काव्यविधा के विभिन्न पहलुओं में आधुनिक कविता, नई कविता, अकविता गीत, नवगीत आदि विषयों को समाहित अवश्य किया है। हॉ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि पहले जो काव्य के उद्देश्य (काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये । सद्यः परिनिवृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेश युजे।।) निहित किए गए थे उसमें थोड़ी शिथिलता अवश्य देखी जा सकती है।

ISSN : 2582-9092

अंत में मैं इतना कह सकता हूँ कि आधुनिक कवियों ने लगभग सभी समस्याओं को अपनी कविता का विषय बनाया है और उसे युगीन परिप्रेक्ष्य में अपने दृष्टिकोण से परखने की कोशिश भी की है।

सन्दर्भ–ग्रंथ–सूची

1. हिन्दी साहित्यःयुगबोध एवं समस्याएँ– डॉ. शिवकुमार मिश्र, हिन्दी साहित्य में युगीन बोध– संपादक–शैलजा भारद्वाज, चिन्तन प्रकाशन, हंसपुरम्, कानपुर, उत्तर–प्रदेश, वर्ष– 2011
2. धार कम इधर–उधर, बच्चन, पृ.–73–74, परम्परा और प्रगति की भूमिका पर नई कविता, पृ.–78, डॉ. हरिचरण शर्मा, आशा प्रकाशन गृह, करौली बाग, नई–दिल्ली, वर्ष–1972
3. गिरिजाकुमार माथुर–धूप के धान,पृ–49–50, हंस–नई–दिल्ली, दिसंबर–1947
4. शिवमंगलसिंह सुमन– पर आंखे नहीं भरी, पृ.–101–102, परम्परा और प्रगति की भूमिका पर नई कविता, पृ.–78, डॉ. हरिचरण शर्मा, आशा प्रकाशन गृह, करौली बाग, नई–दिल्ली, वर्ष–1972
5. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि–डॉ. सुरेश अगवाल, पृ.–204, अशोक प्रकाशन, नई–दिल्ली–110006, वर्ष–1998
6. संसद से सड़क तक – धूमिल, वाणी प्रकाशन, नई–दिल्ली
7. मुक्तिबोध अंधेरे में एक विश्लेषण– संपादक–डॉ. विजय सिंह एवं डॉ. गया प्रसाद गुप्त, पृ.–77, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष– 2005
8. बीज से फूल तक – पृ.–44, एकान्त श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन, नई–दिल्ली, 2003
9. बीज से फूल तक – पृ.–44, एकान्त श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन, नई–दिल्ली, 2003
10. आजादी के बाद–बच्चन –इंटरनेट साभार
11. युगवाणी–सुमित्रानन्दन पंत, पृ.–64, आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना– सुधाकर शंकर कलवडे, पृ.–244, पुस्तक संस्थान, नेहरू–नगर, कानपुर, वर्ष–1973
12. औरत के हक में –, तसलीमा नसरीन, पृ.–52, वाणी प्रकाशन, नई–दिल्ली, 2007

सहायक अध्यापक
बड़ौदा